



STOCK PATHSHALA
LEARN MORE, EARN MORE!

STOCK PATHSHALA

कवर्ड कॉल स्ट्रैटेजी PDF

अपने पास पहले से मौजूद शेयरों पर प्रीमियम कमाने की व्यावहारिक
गाइड: पेऑफ, फॉर्मूले, भारत के नियम और ट्रेड से पहले की चेकलिस्ट।

stockpathshala.com

शैक्षणिक सामग्री। निवेश सलाह नहीं। सभी आंकड़े काल्पनिक हैं।

कवर्ड कॉल क्या है?

शेयर आपके पास हैं। उन पर कॉल बेचिए। प्रीमियम आज ही कमाइए।

कवर्ड कॉल का मतलब है कि आप किसी स्टॉक के शेयर (या उसकी लॉन्ग पोजीशन) रखते हैं और उसी स्टॉक का **कॉल ऑप्शन बेचते** हैं। इसे “कवर्ड” इसलिए कहते हैं क्योंकि अगर खरीदार ऑप्शन एक्सरसाइज़ करे, तो आपके शेयर डिलीवर किए जा सकते हैं।

कॉल बेचने के बदले आपको **प्रीमियम** मिलता है। आगे कुछ भी हो, यह प्रीमियम आपका ही रहता है।

सौदा सीधा है: स्ट्राइक प्राइस से ऊपर का मुनाफ़ा आप छोड़ देते हैं, और बदले में आज की कमाई और गिरावट में थोड़ी राहत पाते हैं।

यह कैसे काम करता है

इसे ऐसे समझिए जैसे आप अपने शेयर की ऊपर की कमाई किराये पर दे रहे हों। कॉल खरीदने वाला आपको इस हक के लिए पैसे देता है कि वह स्ट्राइक पर आपके शेयर खरीद सके। अगर स्टॉक स्ट्राइक से नीचे रहता है, तो ऑप्शन बेकार हो जाता है और प्रीमियम व शेयर, दोनों आपके पास रहते हैं।

अगर एक्सपायरी पर स्टॉक स्ट्राइक के ऊपर बंद होता है, तो शेयर स्ट्राइक पर बिक जाते हैं। आपका मुनाफ़ा सीमित रहता है, फिर भी प्रीमियम आपके पास रहता है।

ट्रेडर इसे कब इस्तेमाल करते हैं

आम तौर पर कवर्ड कॉल इन हालात में सोचा जाता है:

- आपको लगता है कि स्टॉक साइडवेज़ रहेगा या धीरे-धीरे ही ऊपर जाएगा।
- आप ऐसे शेयरों से नियमित आमदनी चाहते हैं जिन्हें आप वैसे भी रखने वाले हैं।
- स्टॉक स्ट्राइक तक पहुंचे तो आप वहां शेयर बेचने को तैयार हैं।
- आप हल्की गिरावट के लिए एक छोटा बफ़र चाहते हैं।

मुख्य फॉर्मूले

किसी भी कवर्ड कॉल पर ये लागू होते हैं। सारे आंकड़े प्रति शेयर हैं; रुपये की रकम के लिए लॉट साइज़ से गुणा करें।

अधिकतम मुनाफ़ा = (स्ट्राइक - खरीद भाव) + मिला हुआ प्रीमियम

ब्रेक-ईवन = खरीद भाव - मिला हुआ प्रीमियम

अधिकतम नुकसान = खरीद भाव - मिला हुआ प्रीमियम (अगर स्टॉक शून्य हो जाए)

अपसाइड स्ट्राइक पर सीमित है। डाउनसाइड सिर्फ प्रीमियम जितना कम होता है, खत्म नहीं होता।

इस गाइड के उदाहरण के आंकड़े

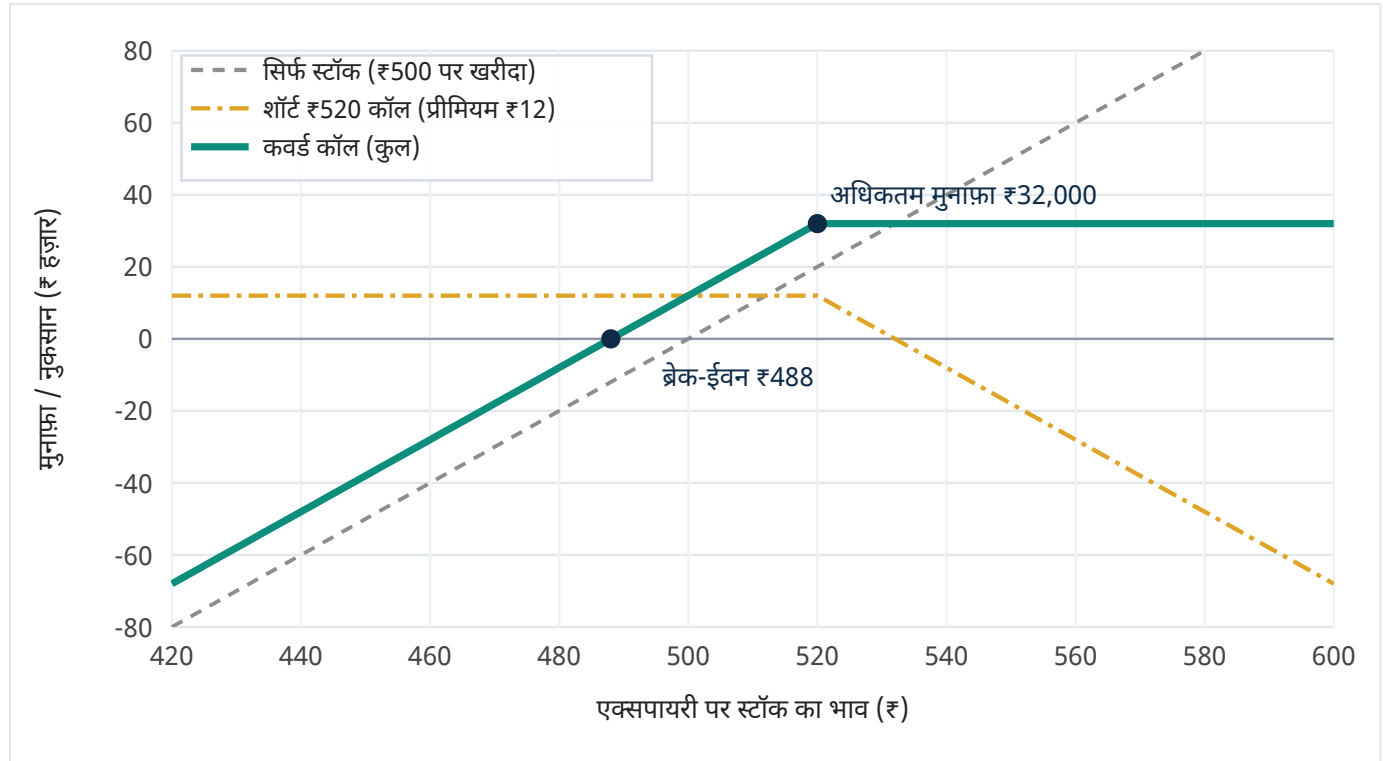
काल्पनिक स्टॉक ₹500 पर खरीदा। आपने ₹12 के प्रीमियम पर ₹520 की कॉल बेची। लॉट साइज़ 1,000 शेयर (सिर्फ उदाहरण के लिए; असली लॉट साइज़ अलग होते हैं, NSE पर जांच लें)।

माप	प्रति शेयर	प्रति लॉट (1,000)
अधिकतम मुनाफ़ा	₹32 (20 + 12)	₹32,000
ब्रेक-ईवन	₹488 (500 - 12)	-
अधिकतम नुकसान (स्टॉक शून्य होने पर)	₹488	₹4,88,000

पेऑफ डायग्राम

एक्सपायरी पर स्टॉक, शॉर्ट कॉल और कंबाइंड पोजीशन कैसे चलते हैं।

चार्ट में ऊपर दिए काल्पनिक आंकड़े इस्तेमाल हुए हैं। हरी रेखा आपका कवर्ड कॉल है। यह स्टॉक के साथ ऊपर जाती है और फिर स्ट्राइक पर सपाट हो जाती है।



चार्ट कैसे पढ़ें

- ₹488 से नीचे आपको नुकसान होता है, पर सिर्फ स्टॉक रखने के मुकाबले यह नुकसान ₹12 प्रति शेयर कम रहता है।
- ₹520 या उससे ऊपर आपका मुनाफ़ा ₹32,000 पर ही रुका रहता है, स्टॉक कितना भी ऊपर जाए।
- ₹488 और ₹520 के बीच आप मुनाफ़े में रहते हैं, और सबसे अच्छा नतीजा स्ट्राइक पर मिलता है।

उदाहरण: एक्सपायरी पर अलग-अलग स्थितियां

एक लॉट (1,000 शेयर) का मुनाफ़ा या नुकसान, अलग-अलग क्लोज़िंग भाव पर। काल्पनिक आंकड़े, चार्जस और टैक्स से पहले।

एक्सपायरी पर स्टॉक	स्टॉक का P&L	शॉर्ट कॉल का P&L	कवर्ड कॉल का P&L
₹440	-₹60,000	₹12,000	-₹48,000
₹470	-₹30,000	₹12,000	-₹18,000
₹488	-₹12,000	₹12,000	₹0
₹500	₹0	₹12,000	₹12,000
₹520	₹20,000	₹12,000	₹32,000
₹540	₹40,000	-₹8,000	₹32,000
₹580	₹80,000	-₹48,000	₹32,000

हाइलाइट की गई पंक्तियां: ब्रेक-ईवन (488) और स्ट्राइक (520)। 520 से ऊपर स्टॉक का अतिरिक्त फ़ायदा शॉर्ट कॉल के नुकसान में कट जाता है।

स्टेप-बाय-स्टेप चेकलिस्ट

चार चरणों में आगे बढ़िए। अगले चरण से पहले हर बात पर टिक लगाइए।

1. कॉल बेचने से पहले

- ☐ पक्का कीजिए कि शेयर आपके पास हैं या आपकी लॉन्ग पोजीशन है, और आपको अपना खरीद भाव पता है।
- ☐ NSE पर मौजूदा लॉट साइज़ जांचिए और अपनी मात्रा उससे मिलाइए।
- ☐ अपना नज़रिया तय कीजिए: साइडवेज़ या हल्का तेज़ी वाला, और स्ट्राइक पर बेचने को तैयार।
- ☐ शॉर्ट कॉल के लिए ब्रोकर को कितना मार्जिन चाहिए, यह देखिए। आपके डीमैट शेयर इसे अपने-आप कम नहीं करते।
- ☐ आने वाली घटनाएं देखिए: नतीजे, डिविडेंड, नीति की तारीखें।

2. एंट्री के समय

- ☐ ऐसा स्ट्राइक चुनिए जिस पर आप शेयर बेचने में सहज हों।
- ☐ अपने लक्ष्य के हिसाब से एक्सपायरी चुनिए। छोटी एक्सपायरी में टाइम वैल्यू तेज़ी से घटती है।
- ☐ प्रीमियम की तुलना अपने अपसाइड की सीमा से कीजिए। क्या यह सौदा वाजिब है?
- ☐ लिमिट ऑर्डर लगाइए और बिड-आस्क स्प्रेड देखिए।
- ☐ अपना ब्रेक-ईवन और अधिकतम मुनाफ़ा लिखकर रखिए।

3. ट्रेड के दौरान

- ☐ स्टॉक को अपने स्ट्राइक और ब्रेक-ईवन के मुकाबले देखते रहिए।
- ☐ मार्जिन पर नज़र रखिए, खासकर जब भाव बढ़े या एक्सपायरी पास आए।
- ☐ पहले से तय कीजिए कि स्टॉक तेज़ी से गिरा तो क्या करेंगे।
- ☐ पहले से तय कीजिए कि स्टॉक स्ट्राइक पार करके चढ़ गया तो क्या करेंगे।
- ☐ सिर्फ इसलिए और कॉल मत बेचिए कि प्रीमियम आकर्षक लग रहा है।

4. एक्सपायरी के पास

- ☐ अगर स्टॉक ऑप्शन की कॉल इन-द-मनी है, तो याद रखिए कि डिलीवरी होनी है। शेयर अनप्लेज्ड और उपलब्ध रखिए।
- ☐ तय कीजिए: एक्सपायर होने दें, कॉल वापस खरीदें, या अगली तारीख पर रोल करें।
- ☐ आखिरी हफ्ते में लगने वाला अतिरिक्त मार्जिन जांचिए।
- ☐ ट्रेड की समीक्षा कीजिए: क्या ठीक रहा, क्या नहीं।

भारत के नियम और जोखिम

भारतीय ट्रेडर के लिए ज़रूरी नियम। मौजूदा जानकारी NSE और अपने ब्रोकर से जांच लें।

भारत से जुड़ी बातें

- **स्टॉक ऑप्शन फिज़िकली सेटल होते हैं।** एक्सपायरी पर इन-द-मनी स्टॉक कॉल का मतलब है स्ट्राइक पर शेयरों की डिलीवरी।
- **इंडेक्स ऑप्शन कैश सेटल होते हैं।** निफ्टी और बैंक निफ्टी ऑप्शन में शेयर डिलीवरी नहीं होती, सिर्फ नकद हिसाब होता है।
- **डीमैट शेयर मार्जिन अपने-आप कम नहीं करते।** शेयर इक्विटी सेगमेंट में रहते हैं, जबकि शॉर्ट कॉल का मार्जिन डेरिवेटिव्स में गिना जाता है।
- **प्लेज।** प्लेज किए शेयर हेयरकट के बाद कोलैटरल गिने जाते हैं, और ब्रोकर आम तौर पर मार्जिन का कुछ हिस्सा नकद में मांगते हैं। प्लेज किए शेयर अनप्लेज होने तक डिलीवर नहीं हो सकते।
- **एक्सपायरी के पास और भाव बढ़ने पर मार्जिन बढ़ सकता है।** ब्रोकर एक्सचेंज के न्यूनतम से ज़्यादा भी ले सकते हैं।
- **लॉट साइज़ बदलते रहते हैं।** NSE समय-समय पर लॉट साइज़ बदलता है। ट्रेड से पहले मौजूदा लॉट साइज़ ज़रूर जांचिए।
- **टैक्स।** F&O के नतीजों को आम तौर पर कारोबारी आय माना जाता है। अपने मामले में CA से पुष्टि कीजिए।

जिन जोखिमों का सम्मान करें

कवर्ड कॉल को अक्सर कंज़र्वेटिव कहा जाता है। फिर भी इसमें असली जोखिम है।

- **स्टॉक गिरे तो।** प्रीमियम एक छोटा सहारा है। बड़ी गिरावट का मतलब शेयरों पर बड़ा नुकसान।
- **सीमित अपसाइड।** स्टॉक उछला तो ज़्यादातर फ़ायदा आपके हाथ से निकल जाएगा।
- **असाइनमेंट।** स्टॉक ऑप्शन में आपको शेयर डिलीवर करने पड़ सकते हैं और आपकी पोजीशन खत्म हो सकती है।
- **गैप रिस्क।** रातोंरात की खबर स्टॉक को आपके स्ट्राइक या ब्रेक-ईवन के पार ले जा सकती है।
- **एक ही स्टॉक पर टिकना।** एक स्टॉक रखकर उसी पर कॉल बेचने से आपका पोर्टफोलियो डायवर्सिफाई नहीं होता।
- **लागत।** ब्रोकरेज, STT और दूसरे चार्जस नेट प्रीमियम घटा देते हैं।

संक्षिप्त तुलना और शब्दावली

दो जुड़ी हुई स्ट्रेटेजी, फिर जानने लायक दस शब्द।

जुड़ी हुई स्ट्रेटेजी

स्ट्रेटेजी	एक पंक्ति में
कवर्ड कॉल	लॉन्ग स्टॉक + शॉर्ट कॉल: प्रीमियम की कमाई, अपसाइड सीमित, गिरावट में थोड़ा सहारा।
प्रोटेक्टिव पुट	लॉन्ग स्टॉक + लॉन्ग पुट: नुकसान की एक तय सीमा के लिए प्रीमियम चुकाना, अपसाइड खुला रहता है।
सिंथेटिक कवर्ड कॉल	लॉन्ग स्टॉक + शॉर्ट कॉल का पेऑफ शॉर्ट पुट जैसा ही दिखता है।

शब्दावली

शब्द	मतलब
प्रीमियम (Premium)	ऑप्शन खरीदार, विक्रेता को जो कीमत चुकाता है।
स्ट्राइक प्राइस (Strike price)	वह भाव जिस पर ऑप्शन एक्सरसाइज़ हो सकता है।
एक्सपायरी (Expiry)	वह तारीख जब ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट खत्म होता है।
लॉट साइज़ (Lot size)	एक कॉन्ट्रैक्ट में शेयरों की संख्या। NSE पर जांचें।
इन द मनी (ITM)	ऐसी कॉल जिसका स्ट्राइक स्टॉक के भाव से नीचे हो।
आउट ऑफ द मनी (OTM)	ऐसी कॉल जिसका स्ट्राइक स्टॉक के भाव से ऊपर हो।
असाइनमेंट (Assignment)	विक्रेता से कॉन्ट्रैक्ट पूरा करने को कहा जाना।
फिज़िकल सेटलमेंट	शेयरों की डिलीवरी से सेटलमेंट, जो स्टॉक ऑप्शन में होता है।
ब्रेक-ईवन (Break-even)	वह भाव जहां ट्रेड में न फ़ायदा होता है, न नुकसान।
रोलिंग (Rolling)	मौजूदा ऑप्शन बंद करके आगे की एक्सपायरी का ऑप्शन बेचना।

ट्रेड से पहले की वर्कशीट

हर कवर्ड कॉल से पहले इसे भरिए। प्रिंट कीजिए या अपनी जर्नल में उतार लीजिए।

विवरण	आपके नोट्स
स्टॉक और तारीख	
खरीद भाव (प्रति शेयर)	
लॉट साइज़ (NSE पर जांचा हुआ)	
लॉट की संख्या	
चुना हुआ स्ट्राइक प्राइस	
एक्सपायरी की तारीख	
प्रीमियम (प्रति शेयर)	
अधिकतम मुनाफ़ा = (स्ट्राइक - खरीद भाव) + प्रीमियम	
ब्रेक-ईवन = खरीद भाव - प्रीमियम	
अधिकतम नुकसान = खरीद भाव - प्रीमियम	
ब्रोकर का ज़रूरी मार्जिन	
क्या शेयर प्लेज हैं? डिलीवरी के लिए उपलब्ध हैं?	
एक्सपायरी से पहले की घटनाएं	
स्टॉक गिरे तो बाहर निकलने की योजना	
स्टॉक स्ट्राइक के ऊपर चढ़े तो योजना	

☐ मैं समझता/समझती हूँ कि मुझे शेयर डिलीवर करने पड़ सकते हैं। ☐ मैं ऊपर दिखाया गया अधिकतम नुकसान स्वीकार करता/करती हूँ।

आगे क्या करें

पहले आंकड़ों का अभ्यास कीजिए, फिर आदत बनाइए।

कवर्ड कॉल कागज़ पर आसान दिखता है। असली हुनर सही स्ट्राइक चुनने, मार्जिन संभालने और स्टॉक हिलने पर शांत रहने में है।

असली पैसा लगाने से पहले कुछ काल्पनिक ट्रेड पर वर्कशीट भरकर देखिए।

अगर आप इसे किसी ट्रेडर के साथ बैठकर सीखना चाहते हैं, तो Stock Pathshala ऑप्शन ट्रेडिंग की लाइव क्लासेस चलाता है, जिनमें हर लर्नर के हिसाब से प्लान बनता है। जानकारी यहां है: stockpathshala.com/option-trading-classes/

अस्वीकरण

यह PDF सिर्फ शिक्षा के लिए है और निवेश सलाह नहीं है। सभी उदाहरण काल्पनिक हैं। किसी मुनाफ़े की गारंटी नहीं है। ऑप्शन में जोखिम होता है और आप पैसा गंवा सकते हैं, मिले हुए प्रीमियम से ज़्यादा भी। नियम, लॉट साइज़ और मार्जिन बदलते रहते हैं, इसलिए मौजूदा जानकारी NSE और अपने ब्रोकर से जांच लें। टैक्स के बारे में चार्टर्ड अकाउंटेंट (CA) से पुष्टि कीजिए।